

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्रीकुमारवददेशिक विरचितम्
॥ श्रीमद्वेदान्तदेशिक विग्रहध्यानम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्रीमद्देदान्तदेशिक रिग्रहध्यानम् ॥

श्रीमान् रेक्कटनाथार्यः करितार्किककेसरी ।

रेदान्ताचार्यरथो मे सन्निधत्तां सदा हृदि ॥

श्रीमल्लम्बण योगीन्द्र सिद्धान्त रिजयध्वरजम् ।

रिश्रामित्र कुलोद्भूतं ररदार्यमहं भजे ॥

मनः प्रसूनस्तवकं मदीयं नाथस्य कौतूहलमातनोतु ।

विभर्ति यो भागरतेषु सरतल्लस्रतल्लेषु च पारतल्लयम् ॥ 1 ॥

श्रीरादिहंसांबुद देशिकेन्द्र पादांबुज द्वन्द्व परागदैरम् ।

श्रीरेक्कटेशं गुरुसारभौमं चेतश्चिरं भारय सौम्यरूपम् ॥ 2 ॥

श्रीमत्त्रयीशेखर देशिकस्य श्रीरेक्कटेशस्य रूपमनोज्ञम् ।

आदित्यरर्णं रिशदं ममाङ्गोः आपादचूडापदमारिरस्तु ॥ 3 ॥

निर्निद्रपक्केरुहयुग्मशोभा निराकृतिप्रौचपदाज्युग्मम् ।

नीरङ्ग निर्यन्नखचन्द्रचन्द्रा तपस्फुटद्व्यातृहदक्कारम् ॥ 4 ॥

निजार्थचन्द्रोपमितालकोदयन् निरन्तरोद्भासि सितोर्ध्वपुञ्जम् ।

सितायतस्त्रच्छसरोजवक्त्रं मुनेः शठारैरि मूर्तिभेदम् ॥ 5 ॥

मुखेन्द्रधः पाति करोत्कराकृति स्फुटच्छरिश्मश्रुपरिष्कृतोरसम् ।

सितोपरीतं तुलसीसरोरुह अम्बमालिकालङ्कृतचारुकक्करम् ॥ 6 ॥

अनङ्ग सौरर्ण निषङ्गकान्ति प्रसङ्गभङ्गारह चारुजङ्घम् ।

लसत्ककुद्मत्ककुदाभिरूप्य नितान्तनिर्भासितजानुयुग्मम् ॥ 7 ॥

রস্তাররস্তম্ভ রিজ্জুমাণ দুর্গরসরক্ষষ সক্তিদৃশ্যম্।
কটীতটম্লিষ্টপরিত্রশুভ্রান্তরীযনির্ভাসি নিতম্ববিষম্ ॥ ৪ ॥

আরতগর্ভোজ্জ্বল নাভি চক্রং অত্যাযতোরস্থলদীপ্যমানম্।
আজানু লম্ব্যযত বৃত্ত বাহুং অতুন্নতাংসং শ্রিতগূঢ়জক্রম্ ॥ ৯ ॥

শঙ্খপ্রতিস্পর্ধিসুজাতকণ্ঠং শান্তোপমানাযিতকর্ণপাশম্।
সুস্মিগ্ধবদ্ধস্মিতচূতপোত নর্যপ্ররালোপমিতাধরোষ্টম্ ॥ ১০ ॥

সুনির্মলোদক্ষিতমৌক্তিকালী জডীকৃতপ্রৌটিমদন্তপঙ্ক্তিম্।
রিকাসিনাসাপুটকান্তিশান্ত প্রফুল্লতিল্যপ্রসরারলেপম্ ॥ ১১ ॥

নাসালসং কল্পলতা প্রসূন যুগাযিতান্তোরুহচারুনেত্রম্।
তৎসৌরভাঘ্রাণরিনিশ্চলালি দ্বয়োপমক্রয়ুগলাভিরামম্ ॥ ১২ ॥

সুজাত চরণাম্বুজং সুদৃঢ়গুল্ফ জানুরুকং
সিতান্তরকটীতটং সুভগনাভিরক্ষোগলম্।
সুদীর্ঘযুগবাহুকং শুভকপোলনাসাম্বিকং
মনোরুচিরমালিকং কলয রেঙ্কটেশং গুরুম্ ॥ ১৩ ॥

রথাস্তজলজাঙ্কিতঃ সুললিতোর্ধ্বপুঞ্জোজ্জ্বলঃ
সরোজতুলসীমণিগ্রথিতমালিকাভূষণঃ।
সিতাংশুকযুগাঙ্কিতঃ স্মিতমুখো দযাশীতলঃ
চকাস্ত হৃদি মে সদা স গুরুরেঙ্কটাধীশ্বরঃ ॥ ১৪ ॥

য ইমাং দিনচর্যাং চ রিগ্রহধ্যানপদ্ধতিম্।
ররদার্যকৃতাং ভক্ত্যা শীলযেৎ মুক্ত এর সঃ ॥ ১৫ ॥

॥ ইতি শ্রীমদ্বৈদান্তদেশিক রিগ্রহধ্যানং সমাপ্তম্ ॥

